

Rishi Vishwamitra Vidya Foundation

ऋग्वेद मन्त्र १.१.४

अग्नि और यज्ञ का विज्ञान तथा आध्यात्म

Presented by: Acharya Kapil

Contact: 8756390767

वेदों के मन्त्र केवल कर्मकाण्ड तक सीमित नहीं हैं; वे अपने भीतर गहरा आध्यात्मिक और वैज्ञानिक अर्थ समेटे हुए हैं। आइए, ऋग्वेद के प्रथम मण्डल, प्रथम सूक्त के चौथे मन्त्र का विस्तार से अध्ययन करते हैं।

अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि । स इद्देवेषु गच्छति ॥४

शब्दार्थ (Word-by-Word Meaning)

अग्ने (Agne) हे अग्निदेव! / हे परमेश्वर! / हे भौतिक अग्नि!

यम् (Yam) जिस

यज्ञम् (Yajnam) यज्ञ को / श्रेष्ठ कर्म को

अध्वरम् (Adhvaram) हिंसारहित (जिसमें किसी का अहित न हो)

विश्वतः (Vishvatah) सब ओर से (सर्वासु दिक्षु)

परिभूः (Paribhuuh) घेरे हुए / व्याप्त / रक्षक

असि (Asi) आप हैं

सः (Sah) वह (यज्ञ)

इत् (It) ही (निश्चय ही)

देवेषु (Deveshu) देवों में / विद्वानों में / प्राकृतिक शक्तियों (दिव्य पदार्थों) में

गच्छति (Gacchati) जाता है / प्राप्त होता है



मन्त्र का भावार्थ (Translations)

१. आचार्य सायण के अनुसार (पारम्परिक/यज्ञीय दृष्टिकोण):

हे अग्निदेव! आप जिस हिंसारहित यज्ञ को सब ओर से (चारों दिशाओं से) घेरकर उसकी रक्षा करते हैं, निश्चय ही वह यज्ञ देवताओं तक पहुँचता है (और उन्हें तृप्त करता है)।

(तात्पर्य: आहवनीय, गार्हपत्य आदि विभिन्न वेदियों में व्याप्त अग्नि राक्षसों आदि से यज्ञ की रक्षा करती है, जिससे यज्ञ निर्विघ्न पूर्ण होकर देवलोक तक पहुँचता है।)

२. महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार (आध्यात्मिक दृष्टिकोण):

हे सर्वव्यापक परमेश्वर! (अथवा हे भौतिक अग्नि!) आप जिस हिंसारहित (अध्वर) और दोषरहित श्रेष्ठ कर्म (यज्ञ) में सब ओर से व्याप्त होते हैं, वही श्रेष्ठ कर्म विद्वानों और दिव्य गुणों को प्राप्त होता है।

(तात्पर्य: जो कर्म ईश्वर को साक्षी मानकर बिना किसी को हानि पहुँचाए किए जाते हैं, वे ही सत्य और दिव्य परिणामों तक पहुँचते हैं।)



वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific Approach)

महर्षि दयानन्द ने 'अग्नि' का अर्थ 'भौतिक अग्नि' (Physical Fire/Energy) भी किया है। यदि हम इसे विज्ञान के चश्मे से देखें:

- **ऊर्जा का संरक्षण और रूपान्तरण (Transformation of Energy):** भौतिक अग्नि जब 'अध्वर' (अर्थात् पर्यावरण को बिना हानि पहुँचाए शुद्ध रूप से किया गया दहन या यज्ञ) को चारों ओर से घेरती है, तो वह आहुत पदार्थों (Matter) को सूक्ष्म ऊर्जा (Energy/Gases) में बदल देती है।
- **देवेषु गच्छति:** ऊर्जा में परिवर्तित वह सूक्ष्म पदार्थ अंतरिक्ष में 'देवों' अर्थात् प्राकृतिक शक्तियों (सूर्य की रश्मियों, वायुमण्डल, और बादलों) तक पहुँचता है। यह जल-चक्र (Water Cycle) और वायु-शोधन (Air Purification) की सटीक वैज्ञानिक प्रक्रिया का वर्णन है। कोई भी पदार्थ नष्ट नहीं होता, अग्नि केवल उसका स्वरूप बदल कर उसे ब्रह्मांड (विश्वतः) में फैला देती है।



व्याकरणिक टिप्पणी (Grammar Derivation)

पाणिनीय अष्टाध्यायी के अनुसार मन्त्र के पदों की व्याकरणिक व्युत्पत्ति इस प्रकार है:

अग्ने: यह सम्बोधन (Vocative) है। 'आमन्त्रितस्य च' तथा पाष्ठिक सूत्र (पा. सू. ६.१.१९८) के अनुसार इसमें आमन्त्रिताद्युदात्तत्व (प्रथम स्वर का उदात्त) हुआ है।

अध्वरम्: न विद्यते ध्वरो (हिंसा) अस्य इति अध्वरः (बहुव्रीहि समास)। ध्वर का अर्थ है हिंसा, जिसका इसमें निषेध है। 'नञ्सुभ्याम्' (पा. सू. ६.२.१७२) सूत्र से यह अन्तोदात्त (अंतिम स्वर उदात्त) है।

विश्वतः: 'विश्व' शब्द से 'षष्ठ्या व्याश्रये' (अष्टा. ५.४.४८) सूत्र से 'तसि' (तसिल) प्रत्यय हुआ है। 'लिति' (पा. सू. ६.१.१९३) से तसिल प्रत्यय के स्वर को बाधित कर पूर्व वर्ण को उदात्त हुआ है।

परिभूः: 'परि' अव्यय है। अव्ययपूर्वपदप्रकृतिस्वरत्व (पा. सू. ६.२.२) प्राप्त होने पर, उसका अपवाद 'कृदुत्तरपदप्रकृतिस्वरत्वम्' (पा. सू. ६.२.१३९) लागू होता है। 'परि' का अर्थ सर्वतोभाव (सब ओर से) है।

असि: यह तिङन्त (क्रिया) पद है। सामान्यतः मन्त्रों में क्रिया अनुदात्त होती है, परन्तु यहाँ 'यद्धृत्तान्नित्यम्' (पा. सू. ८.१.६६) सूत्र से 'यम्' (यद् शब्द) के प्रयोग के कारण निघात (सर्वानुदात्त) का अभाव हो गया है।